गुरु ग्रंथ साहिब
(1708–अनन्त काल)

सिख धर्म में गुरु का पहला संकल्प :

सिख धर्म में 'गुरु' शब्द का भाव इसके प्रचलित अर्थ जैसे एक अध्यापक या एक विशेषज्ञ, या एक मार्गदर्शक, या एक मावन शरीर, से नहीं है। यह दो शब्दों का योग है – 'गु' और 'रु' । 'गु' का अर्थ है–अंधेरा, 'रु' का अर्थ है– प्रकाश। सो, गुरु का भाव है– प्रकाश जो सब प्रकार का अंधेरा दूर करता है।

ज्योति या दैवी प्रकाश :

जब निराकार अकाल पुरुख ने अपने गुण आकार में प्रगट किये तो उस आकार का नाम गुरु नानक हुआ :

"जोति रूपि रहि आपि गुरु नानकु कहायउ।"

(गु : ग्रंथ जी, भट्टां के सवैये, पृष्ठ 1408)

इस प्रकार गुरु नानक देव जी दैवी प्रकाश का स्वरूप थे।

"सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुनाइया।"

(आसा की वार, पृष्ठ 466)

अर्थात्, सच्चे गुरु (नानक) में अकाल पुरुख ने अपनी ज्योति रख दी और उनके माध्यम से अकाल पुरुख ने अपने आप को प्रगट किया।

जब गुरु नानक जी ने भाई लहणा जी को गुरगद्दी पर बिठाकर पाँच पैसे और नारियल आगे रखकर, माथा टेका और उन्हें गुरु अंगद नाम दिया तो गुरु अंगद जी भी दैवी प्रकाश का स्वरूप हो गये।

"जोति ओहा जुगति साइ सहि काइया फेरि पलटीअै।"

(सत्ता बलवंड, पृष्ठ 966)

यहाँ इस विशेष बात को याद रखना ज़रूरी है कि केवल उस समय लोगों ने गुरु अंगद देव जी के सम्मुख सिर झुकाये, जब ज्योति उनके अन्दर प्रविष्ट करा दी गई थी। गुरगद्दी पर बैठने से पहले उनके सम्मुख किसी ने भी माथा नहीं टेका, जिसका अर्थ है कि सिख (गुरु अंगद देव जी के) शरीर को माथा नहीं टेकते थे क्योंकि मानव शरीर गुरु नहीं था, बल्कि ईश्वरीय ज्योति को माथा टेकते थे जो गुरु नानक जी से गुरु अंगद देव जी में प्रवेश कर गई।

यही मर्यादा गुरगद्दी प्रदान करने की गुरु गोबिंद सिंह जी तक चलती गई। फिर दसवें पातशाह गुरु गोबिंद सिंह जी ने पाँच पैसे और नारियल ग्रंथ साहिब के सम्मुख रखकर और माथा टेककर आदि ग्रंथ साहिब को गुरु नानक देव जी की गद्दी सौंप दी। जब गुरुता गुरु ग्रंथ साहिब को मिली तो यह भी ईश्वरीय प्रकाश का स्वरूप हो गये। तो यह स्पष्ट तौर पर याद रखना चाहिए कि गुरु ग्रंथ साहिब के आगे माथा टेका जाता है तो वे एक ग्रंथ को माथा नहीं टेकते, बल्कि एक दैवी प्रकाश अर्थात् ज्योति (गुरु) को माथा टेकते हैं, जो गुरगद्दी मिलने के समय उनमें प्रवेश हुई।

सिख धर्म में 'गुरु' शब्द तीन परस्पर संबंधित पक्षों से प्रयोग में लाया जाता है :

पहला, यह अकाल पुरुख, सब तरफ व्याप्त दैवी ज्योति, दैवी प्रकाश के भाव में :

"गुर दाता गुरु हिव घरु गुरु दीपकु तिह लोइ।[1]
अमर पदारथु नानका मनि मानियै सुखु होई।"

(वार माझ की, श्लोक महल्ला 1, पृष्ठ 137)

"गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु।
गुर की महिमा अगम है किआ कथै कथनहारु।"

(सिरी राग महल्ला 5, पृष्ठ 52)

"गुरु पारब्रह्मु परमेसरु आपि।
आठ पहर नानक गुर जापि।"
(आसा महल्ला 5, पृष्ठ 387)

दूसरा पक्ष, गुरु शब्द गुरु नानक देव जी के लिए भी इस्तेमाल किया गया है क्योंकि वह अकाल पुरुख की ज्योति का स्वरूप थे :

"नानक गुरु गुरु है पूरा मिलि सतिगुर नामु धियाइया।"
(रामकली महल्ला 4, पृष्ठ 882)
"नानक गुरु गुरु है सतिगुरु मै सतिगुरु सरनि मिलावैगो।"
(कानड़ा महल्ला 4, पृष्ठ 1310)
"गुरु परमेसरु एकु है सभ महि रहिया समाइ।"
(सिरी राग महल्ला 5, पृष्ठ 53)

तीसरा पक्ष, 'गुरु' शब्द गुरबाणी –रब्बी बाणी(ईश्वर की बाणी) के लिए भी प्रयोग में लाया गया है। क्योंकि गुरबाणी सीधे अन्दर से अकाल पुरुख से आई और क्योंकि अकाल पुरुख और उसके हुक्म(ईश्वरीय बाणी) में कोई अन्तर नहीं है, गुरबाणी भी गुरु है :

"बाणी गुरु गुरु है बाणी विचि बाणी अमृतु सारे।
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरु निसतारे।"
(नट महल्ला 4, पृष्ठ 982)

गुरबाणी सीधे अकाल पुरुख से आई :

गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु नानक देव जी का जीवन वष्तांत नहीं, बल्कि इसका हरेक शब्द शक्तिमान अकाल पुरुख की महिमा को समर्पित है। गुरु ग्रंथ साहिब पिछले धर्मों का प्रतिरूप नहीं है, गुरबाणी गुरु साहिबान को सीधे अकाल पुरुख से आई। गुरु नानक देव जी ने फरमाया था कि यह बाणी उनका अपना फलसफा नहीं, यह उनका अपना ज्ञान नहीं, और न ही यह उनकी अपनी सोच है, बल्कि यह बाणी उन्हें सीधे अकाल पुरुख की ओर से आ रही थी और वह तो अकाल पुरुख का यह सन्देश जगत को पहुँचा रहे थे। जैसा कि उनका मुख्य वाक्य है :

"जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी ज्ञानु वे लालो।"[2]
(तिलंग महल्ला, पृष्ठ 722)
"ता मै कहिया कहणु जा तुझै कहाइया।"
(वडहंस महल्ला 1, पृष्ठ 566)

इसकी पुष्टि और इसके पक्ष पर जोर सभी गुरु साहिबान ने अपनी बाणी में बार–बार दिया है, जैसे :

"सबदे उपजै अमृत बाणी गुरमुख आखि सुणावइया।"
(माझ महल्ला 3, पृष्ठ 125)
"इहु अखरु तिनि आखिया जिनि जगतु सभु उपाइया।"
(श्लोक महल्ला 4, पृष्ठ 306)
"धुर की बाणी आई। तिनि सिगली चिंत मिटाई।"
(सोरठ महल्ला 5, पृष्ठ 628)
"बोले साहिब कै भाणै। दासु बाणी ब्रहमु वखाणै।"
(सोरठ महल्ला 5, पृष्ठ 629)
"जिह बिधि गुर उपदेसिया सो सुनु रे भाई।"
(तिलंग महल्ला 9, पृष्ठ 727)

अर्थात्, जैसे अकाल पुरुख ने मुझे उपदेश दिया है, हे मेरे भाई, वह सुन।

दसवें पातशाह, गुरु गोबिंद सिंह जी ने भी इस सच्चाई को दष्ढ़ किया है कि यह अकाल पुरुख की बाणी है जो गुरु साहिबान के माध्यम से प्रगट हो रही थी :

"जो निज प्रभ मो सो कहा सो कहिहों जगमाहि।"

(गुरु गोबिंद सिंह जी)

'जनमसाखी' में वर्णन है कि गुरु नानक देव जी बहुत बार अपने रबाबी मरदाने को कहा करते थे, "मरदाने, रबाब बजा, बाणी आई है।" वह बाणी फिर गुरु जी लिख लिया करते थे। गुरु ग्रंथ साहिब यही ईश्वरीय बाणी है।

प्रमाणिकता :

गुरु ग्रंथ साहिब, गुरु साहिबान के परम ज्योति में विलीन हो जाने के बाद उनके श्रद्धालुओं ने नहीं लिखा था। यह तो गुरु साहिबान ने स्वयं लिखवाया और संग्रह किया था। सो, यह असली ईश्वरीय बाणी का ग्रंथ है। किसी को भी इसके 1430 पृष्ठों पर अल्पविराम (कोमा) और मात्रा आदि तक को बदलने की आज्ञा नहीं है। सातवें गुरु जी के सुपुत्र रामराय ने केवल एक तुक का अर्थ, बादशाह औरंगजेब को खुश करने के लिए बदलकर सुनाया था तो उसके पिता गुरु हर राय जी ने उसको सदा के लिए छेक दिया था और मुँह नहीं लगाया था। इससे सिद्ध होता था कि कोई भी कभी इस अकाल पुरुख की बाणी को नहीं बदल सकता।

मैक्स आर्थर मैकालफ ने सन् 1899 में अकाल बुंगा, अमष्तसर में एक भाषण पंजाबी में देते हुए कहा था :

> "सिख धर्म में एक और बहुत बड़ा गुण है कि संसार में अन्य धर्मों के जो बड़े–बड़े गुरु हो चुके हैं, उन्होंने कभी एक पंक्ति तक भी अपने हाथों से नहीं लिखी थी। आप लोगों में से शायद ही किसी ने सुना होगा कि यूनान देश का बड़ा तत्ववेत्ता जिसका नाम फीथौगौरस था, जिसके बहुत सारे शिष्य बन गये थे, और जो इतिहास में बहुत ही प्रसिद्ध पुरुष हो गया था, उसने एक पंक्ति भी अपने हाथ से लिखकर पीछे नहीं छोड़ी, जिससे हम यह जान पाते कि ये उसके नियम थे। इस संसार में दूसरा बड़ा उस्ताद सुकरात था जो मसीह से पाँच सौ वर्ष पहले यूनान देश में एक बड़े धार्मिक महात्मा के रूप में प्रसिद्ध हुआ था। वह कहता था कि मेरे अन्दर परमात्मा की आकाशवाणी उतरती है, जो मुझे अच्छे कामों की प्रेरणा देती है और बुरे कामों से हटाती है, पर वह भी अपने बाद कोई ऐसी तुक छोड़कर नहीं गया, जिससे उसका आशय और उसके धर्म के नियमों की स्मृति बनी रहती, जो कुछ उसकी शिक्षा प्रगट रूप में हैं, वह भी उसके शिष्य अफलातून के माध्यम से प्रसिद्ध हुई है। इसके बाद, इस भारत वर्ष में बड़ा धार्मिक गुरु बुद्ध हुआ, उसने भी अपने हाथों कभी कोई पंक्ति नहीं लिखी थी। फिर, इसके बाद बड़ा प्रसिद्ध धार्मिक गुरु मसीह हुआ था, उसने भी एक अक्षर तक नहीं लिखा था। इसकी शिक्षा भी बाइबिल नामक पोथी द्वारा ही प्रसिद्ध हुई थी। परन्तु सिखों के धार्मिक गुरु इन सबसे विलक्षण हुए हैं, क्योंकि उन्होंने अपने धर्म के नियमों को स्वयं लिखा और सत्य उपदेशों का संग्रह 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' आपके लिए रच गये। इस सन्दर्भ में सिख धर्म सबसे आगे है।"
>
> (गुरु ग्रंथ साहिब– पोथी पहली, पृष्ठ 'ग', भाई वीर सिंह)

गुरु ग्रंथ साहिब का अद्वितीय आरंभ :

हिंदू पुराण कथा शास्त्र में 'ओऽम' शब्द का अर्थ सदा अद्वैत परमात्मा था। फिर उन्होंने इस का अर्थ एक से अधिक ईश्वर करना आरंभ कर दिया। गुरु नानक देव जी ने इसके पहले पूर्णांक '**१**' और इसके बाद एक 'कार' (एक अर्द्ध चक्र) लगा दिया। इस तरह यह "एक–ओम–कार" हो गया। ऐसा करने के साथ

गुरु जी ने इस विचार पर पक्की मोहर लगा दी जिसका हमेशा–हमेशा के लिए अर्थ हुआ है, "अकाल पुरुख एक है और केवल एक"। सो, गुरु ग्रंथ साहिब अद्वितीय ढंग से पूर्णांक एक (१) से आरंभ होते हैं।

गुरु ग्रंथ साहिब का आरंभ 'मूल मंत्र' अर्थात जपु जी की भूमिका से होता है और जपु जी समस्त गुरु ग्रंथ साहिब का सार है :

" ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि। "

इसका भावार्थ है :

अकाल पुरुख केवल एक है, वह अमर सत्य है, सारी सषष्टि का रचयिता है और हर ओर समाई दैवी आत्मा है। उसे किसी का भय नहीं, किसी से वैर नहीं, काल रहित अस्तित्व है, जन्म–मरण से रहित, स्व–प्रकाशमान है, वह सच्चे गुरु की कृपा से मिलता है।

इसका मूल मंत्र से आगे श्लोक जिसे साधारण तौर पर सत्य–मंत्र कहते हैं, यह है :

जपु! आदि सच जुगादि सच है भी सच नानक होसी भी सच।

अर्थात् :

उस अकाल पुरुख का जाप करो('जपु' शब्द का भाव "जपुजी" बाणी का शीर्षक भी कहा जाता है), जो सारी रचना से पहले से सत्य था, रचना होने के बाद भी सत्य, अब भी सत्य है और, हे नानक वह सदा सत्य रहेगा।

गुरु अर्जन देव जी ने गुरु साहिबान और कुछ भक्तों और मुसलमान दरवेशों की भिन्न–भिन्न बाणी, इसकी प्रामाणिकता की परख करके, 'आदि ग्रंथ साहिब' गुरसिखों की भलाई के लिए अंकित करके तैयार करने का महान कार्य किया। इसे सम्पूर्ण करने के लिए गुरु गोबिंद सिंह जी ने गुरु तेग बहादुर साहिब की बाणी शामिल करके सम्पूर्णता की मुहर लगा दी। उसके बाद आदि ग्रंथ साहिब के इस सम्पूर्ण स्वरूप को गुरु गोबिंद सिंह जी ने गुरगद्दी सौंपी।

सांसारिक जीवन के घोर सागर में धक्के, ठोकरें खाते मनुष्य के लिए केवल गुरु ग्रंथ साहिब का ही एक ओट–आसरा है। यह एक मनुष्य को परमगति पाने के लिए आवश्यक कुछ आदेशों या नैतिक नियमों के अनुसार जीवन जीने में सहायता करता है।

मनुष्य अकाल पुरुख की रचना का तत्व है। मानव शरीर कई तरह की निचली जूनों(योनियों) में से गुजरकर प्राप्त होता है। गुरु ग्रंथ साहिब मनुष्य जीवन की सर्वश्रेष्ठता और लाभ का समर्थन करते हैं क्योंकि इस मनुष्य देह के माध्यम से ही एक व्यक्ति अन्तिम मुक्ति प्राप्त कर सकता है। मनुष्य के पास सचेत जानकारी के लिए भारी सामर्थ्य है जो इसे आवश्यक आध्यात्मिक लक्ष्य पर पहुँचने में सहायता करती है। इसलिए गुरु ग्रंथ साहिब में आध्यात्मिक वृद्धि के लिए सारे उपदेश और प्रेरणाएँ मनुष्य को ही सम्बोधित हैं। मनुष्य के भौतिक मूल्य झूठे 'कूड़' गिने जाते हैं :

"कूडु राजा कूड़ परजा कूडु संसार।
कूडु मंडप कूडु माड़ी कूडू बैसणहारु।
कूडु सुइना कूडु रूपा कुडु पैनणहारु।
कूडु काया कूडु कपडु कूडु रूपु अपारु।
कूड़ मीआ कूडु बीबी खपि होइ खारु।
कूड़ि कूड़े नेहु लगा विसरिया करतारु।
किसु नालि कीचै दोस्ती सभु जगु चलणहारु।
कूडु मिठा कूडु माखिउ कूडु डोबे पूरु।
नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूडु। (श्लोक महल्ला 1, पृष्ठ 468)

गुरु ग्रंथ साहिब में 'नाम' को गुरु के समान समझकर, उसकी महत्ता प्रकट की गई है। 'नाम' मनुष्य को पिछले पापों, क्लेशों, दुखों और जन्म–मरण के चक्कर से छुटकारा दिला देता है। कोई भी रीति, दान, कुर्बानियाँ, व्रत और तप, नाम के बराबर नहीं।

गुरु ग्रंथ साहिब एक अनुयायी को आध्यात्मिक प्रगति की राह पर चलने की दीक्षा देते हैं और उसकी अकाल पुरुख की ओर यात्रा के हर पड़ाव पर अगुवाई करते हैं। गुरु ग्रंथ साहिब एक जहाज है जो एक भगत (सिख) को माया (पदार्थवाद) के सागर में से साफ पार लगा देता है और इस तरह मनुष्य की आत्मा को इस के अन्तिम ठिकाने जो कि परम आनंद है, तक ले जाता है :

"भवजलु बिखमु डरावणो ना कंधी ना पारु।
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना तिसु वंझु मलारु।
सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु।

(सिरी राग महल्ला 1, पृष्ठ 59)

गुरु ग्रंथ साहिब पूरा का पूरा प्रामाणिक है और इसे इसके मूल रूप में संभाल कर रखा हुआ है। यह एक बहुमूल्य जागीर है जो सिखों को गुरु नानक जी के माध्यम से अकाल पुरुख की ओर से मिली है और वे इसका सर्वोच्च सम्मान करते हैं।

गुरु ग्रंथ साहिब में बाणी 31 रागों में हैं, 36 लिखारी हैं और कुल 5872 शब्द (कई 5874 कहते हैं)। 31 राग इस प्रकार हैं :

सिरी राग, राग माझ, राग गउड़ी, राग आशा, राग गूजरी, राग देवगंधारी, राग बिहागड़ा, राग वडहंस, राग सोरठि, राग धनासरी, राग जैतसरी, राग टोडी, राग बैराड़ी, राग तिलंग, राग सूही, राग बिलावलु, राग गौड, राग रामकली, राग नट नाराइन, राग माली गउड़ा, राग मारू, राग तुखारी, राग केदारा, राग भैरव, राग बसंत, राग सारंग, राग मल्हार, राग कानड़ा, राग कल्याण, राग प्रभाती, राग जैजावंती।

रागों के अलावा श्लोक, वारें, गाथा, सवैये और मुंदावणी भी हैं।

4956 शबद छह गुरु साहिबान के हैं :

गुरु नानक देव जी (974 शबद– 19 रागों में)
गुरु अंगद देव जी (62 श्लोक/वार)
गुरु अमरदास जी (907 शबद– 17 रागों में)
गुरु रामदास जी (679 शबद– 30 रागों में)
गुरु अर्जन देव जी (2218 शबद– 30 रागों में)
गुरु तेग बहादुर जी(116 शबद– 15 रागों में)

15 भगतों के 778 शबद :

भगत शेख फरीद जी 1173–1266	116 शबद
भगत जै देव जी 1201–1273	2 शबद
भगत त्रिलोचन जी 1267–1335	4 शबद
भगत नाम देव वी 1270–1350	61 शबद
भगत सधना जी (कोई सन् नहीं, पर भगत नामदेव जी के समय में हुए हैं)	1 शबद
भगत रामा नंद जी 1366–1467	1 शबद
भगत रविदास जी 1378–1529	40 शबद
भगत सैण जी 1390–1440	1 शबद
भगत कबीर जी 1398–1518	541 शबद
भगत धन्ना जी 1415–1475	3 शबद
भगत पीपा जी 1426–1562	1 शबद
भगत सूरदास जी 1478–1585	1 शबद
भगत भीखण जी 1480– 1573	2 शबद
भगत परमानंद जी 1483–1593	1 शबद

भगत बेणी जी(कोई सन् नहीं, पर गुरु नानक के समय में हुआ समझा जाता है) 3 शबद

चार गुरसिखों के 17 शबद :
भाई मरदाना (3 शबद), रबाबी भाई बलवंड राय(5), रबाबी भाई सत्ता डूम(3) और बाबा सुंदर जी (6)

11 भट्ठों के 121 सवैये (कुछ 123 बताते हैं)

भट्ट कलसहार जी	54 सवैये(कुछ लोग 56 कहते हैं)
भट्ट गयंद जी	13 सवैये
भट्ट भिखा जी	2 सवैये
भट्ट कीरत जी	4 सवैये
भट्ट मथुरा जी	12 सवैये (कुछ 14 बताते हैं)
भट्ट जालप जी	5 सवैये
भट्ट सल्ह जी	3 सवैये
भट्ट भल्ह जी	1 सवैया
भट्ट बल्ह जी	5 सवैये
भट्ट हरबंस जी	2 सवैये
भट्ट नल्ह जी	16 सवैये

1. तीन जगत– एक जो हमारे सामने है, दूसरा जो कुछ भी हमारे से ऊपर है और तीसरा, जो भी हमारे से नीचे है।
2. लालो गुरु जी का शिष्य था।